काव्य प्रवाह

जयप्रकाश रावत

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

काव्य प्रवाह

ISBN : 978-81-19686-59-9

रचनाकार
जयप्रकाश रावत

संस्करण : प्रथम, 2024
मूल्य : ₹250/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
तानिया सिंह

आवरण
के. शंकर

मुद्रक
APAC Business Solution, Delhi

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com
www.shabdankurprakashan.com

भूमिका

अनुक्रमणिका

1. वंदना : 00
2. गुरु चरण वंदन : 00
3. संतुलन और संबंध : 00
4. परिवेश : 00
5. नदी प्रवाह : 00
6. परिंदे : 00
7. जिंदा दिल : 00
8. प्रकृति और प्राकट्य : 00
9. जागते रहो : 00
10. सवेरा : 00
11. मजबूर हुआ मज़दूर : 00
12. वक़्त : 00
13. यत्र तत्र सर्वत्र : 00
14. रोग पुराना : 00
15. देशराग : 00
16. नीली चादर : 00
17. जादूगर : 00
18. हमारा भारत : 00
19. मौसम यादों का : 00
20. बंधन : 00
21. सावधान : 00
22. नव गीत : 00
23. भाव पुष्प : 00
24. बिरले लोग : 00
25. कर्तव्य पथ : 00
26. मेरा आदर्श : 00
27. बंधन : 00
28. बंद गाली : 00
29. अफ़सोस : 00
30. जी हाँ शौक है। : 00
31. अथक प्रयास : 00
32. कोई देख रहा है : 00
33. नई फसल : 00
34. हक़ीक़त और फ़साना : 00
35. फैला नशा शराब का : 00
36. उद्घोष : 00
37. बाज़ार : 00
38. जय हिंद : 00
39. तार बेतार : 00
40. आधी हक़ीक़त आधा फ़साना : 00
41. एक कली मुस्काई : 00
42. मंज़िल : 00
43. कर्मफल : 00
44. सात फेरे : 00
45. बोल : 00
46. विरह गीत : 00
47. श्री कृष्ण भावामृत : 00
48. चिड़िया और किसान : 00
49. साँझ और सवेरा : 00
50. संवाद : 00

वंदना



श्वेत वस्त्र श्वेत वर्ण श्वेत हंस संग लिए,
वीणा वेद धारी आ पधारो मात शारदे।

तेज पुंज ज्ञान कुंज आप तिहूँ लोकन में,
काम क्रोध द्वेश भरी मति को उबार दे।

गाऊँ गुणगान तेरो देउ अब संग मेरो,
शीश मैं झुकाऊँ मात दृष्टी को उभार दे,

रूप या कुरूप होइ अणु या अनूप होई,
तीन ताल नृत्य कृत्य तू ही झंकार दे।

शब्द-शब्द गाए गीत भाव संग आए मीत,
धुन सुन तान-ताल मात्र मात्र भार दे।

ताप में हो छाँव तेरी लक्ष पाए राह मेरी,
गाऊ यश कीर्ति तेरी कंठ में पुकार दे।

चंद-छंद चंद-बंध चंद चौपाई संग,
सूर पद रसख़ान सम सुविचार दे।

देव मुनि जन-जन तेज पाईं उड़गन,
दया दृष्टी मात अब मेरी ओर डारि दे।
श्वेत वस्त्र श्वेत वर्ण श्वेत हंस संग लिए,
वीणा वेद धारी आ पधारो मात शारदे।

गुरु चरण वंदन

करूँ वंदना गुरु चरणन की,
रज गुरु चरण चमक चंदन की।
भूलूँ बात जगत की सारी,
गुरु ही पीर हरै तनमन की।

सूरज दे उजियारा जग में,
अंतस ज्योति घिरी थी तम में।
हो आलोकित पथ केहि भाँती,
जगे चेतना कैसे मन में।

सूरत सीरत कहाँ दिखावै,
जड़ता बीच समाई मन में।
तड़ित ताप संग बादर कारे,
उमड़ घुमड़ रहजाए गगन में।

पशुता पतित बंधी खूंठे से,
सच्चे बोल लगें झूठे से।
सद्गति सद्गुण सद्गुरु रोपे,
पिछले बीज रहे सब थोथे।

रूप कुरूप भए सब प्यारे,
जब पाए गुरु दरस तुम्हारे।
हम पथ भटके तुम पथ पाए,
मुरख साथ सुजान कहाए।

देव दनुज दानव हित चाहें,
गुरु चरणन में शीश झुकाएँ।
सेवा करि गुरु आसिस कारज
निर्भय जीवन शेष बिताएं।

गुरु आसीस कवच रक्षा कौ,
मात-पिता सम गुरु बच्चा कौ।
प्रतिदिन ध्यान रखे शिष्य को,
प्रतिफल अंत यही इच्छा कौ।

संदीपन गुरु कृष्ण सुहाए,
निराकार ब्रह्माण्ड समाए।
राम भ्रात संग आश्रम आए,
परशुराम गुरु द्रोण बनाए।

गुरु से ज्योति मिली नयनन की,
राम नाम की चाह लगन की।
करूँ वंदना गुरु चरणन की,
रज गुरु चरण चमक चंदन की।

संतुलन और संबंध

झरनों ने सरिता को भेजा,
प्यार भरा सा ये पैग़ाम।
अपनी लहरों पर लिख देना,
भूले भटके मेरा नाम।

प्यासा कोई ना रह जाए,
नभ थल पर जीने वाला।
झरने सरिता झील सभी ने,
अपना अमृत दे डाला।

सारे मिल दिन रात यहाँ पर,
करते रहते अपना काम।

सागर अपनी हद में रह कर,
करता अपना काम यहाँ।
इंसानों की भूख बड़ी है,
इनकी सीमा मगर कहाँ।

अपनी करनी को न समझते,
औरों को देते इल्ज़ाम।

काले बादल घोर घटा क्यों,
बदल रहे हैं चाल चलन।
सर्दी में सिहरन है ज्यादा,
गर्मी में है अधिक जलन।

घटते जंगल बड़ता धूआँ,
इंसानों के हैं सब काम।

कोई कह दे इंसानों से,
अब अपनी आँखें खोलें।
कुदरत को इल्ज़ाम न देकर,
कसम उठाएँ सच बोलें।

अंधी लूट मचाना छोड़ो,
वक्त ज़रूरत आए काम।

ताना बाना ये कुदरत का,
भूले भटके टूटे ना।
सबका है सबंध पुराना,
साथ हमारा छूटे ना।

रहे संतुलन सबंधों का,
एक दूजे के आएँ काम।
झरनों ने सरिता को भेजा,
प्यार भरा सा ये पैग़ाम।

परिवेश

मैं मुसाफ़िर वादियों में,
खोजता हूँ घर नया।
शांति का परिवेश मेरा,
मन विरागी कर गया।

मौन में ही सुन रहा हूँ,
दूर की आवाज़ को।
भूल बैठा एक परिंदा,
पंख और परवाज़ को।

रिक्त गागर बिन बताए,
आज कोई भर गया।

अनगिनत बिखरे हुए हैं,
रंग ये चारों तरफ़।
दूर तक फैली हुई है,
स्वेत वसना सी बरफ़।

उस शिखर पर दमकता ये,
कौन मोती धड़ गया।
शांति का परिवेश मेरा,
मन विरागी कर गया।

सलिल सरिता के किनारे,
फूल बिखरे प्यार के।
पंक्ति में मीलों तलक हैं,
वृक्ष यें गल हार से।

छू गया झोंका हवा का,
एक सिहरन भर गया।
शांति का परिवेश मेरा,
मन विरागी कर गया।

चेतना सी आगई,
निर्जीव होते भाव में।
जोश भी भरपूर है अब,
डूबती सी नाव में।

था कोई मँझधार धार में,
आज जैसे तर गया।
शांति का परिवेश मेरा,
मन विरागी कर गया।

उड़ रहीं तितली उधर,
सरसों के पीले खेत में।
फिर चमक आने लगी,
सूखी नदी की रेत में।

क्या यही ऋतुराज है,
जो काम ऐसा कर गया।
शांति का परिवेश मेरा,
मन विरागी कर गया।

नदी प्रवाह

जब से बहते देखा है नदियों को,
कितना सहते देखा है नदियों को।

टेडे मेड़े रस्तों पर इठलाती जाती,
थी जल धारा जीवन रस भरपूर बहाती।
तरुड़ी जैसे घूम घूम कर नाच रही हो,
देख राहा हूँ आज थकी सी हाँफ़ रही हो।

कदम ताल देती डमरू की स्वर लहरी सी,
चली हिमालय छोड़ कही बन कर प्रहरी सी।
जैसे शिव की जटा जूट में खेल रही हो,
याद नहीं है स्वयं व्यथा की बात कहीं हो।

कितने पंछी जीव जंतु उल्लास भरे हैं,
कितने पावन तीर्थ स्वयं आ देह धरे हैं।
देख उधर माँझी नईया पर झूल रहे है,
सदा खिलाए फूल बहुत अब शूल सहे हैं।

रवि रश्मि बिखरतीं लहरों पर कुछ ऐसे जैसे,
लाखों मोती आचल पर सजते हैं कैसे।
तल परिवर्तन धिन तबले की ताल दे रहा,
जैसे कोई तरुण हृदय का हाल ले रहा।

देवालय का शंखनाद घण्टे की घन घन,
हरते मन की व्यथा भिगोते मिल कर तन मन।
ऊँचे हिम शिखरों से पाया कितना यौवन,
दिया धरा को दान भरण पोषण का धन।

वसुंधरा से सारे रिश्ते निभा रही है,
है मानव की भूल उसे क्यों मिटा रही है।

बहुत व्यथित हूँ देख कर दिशा दशा को,
कौन है वो इंशान हंस रहा दूर खड़ा जो।
नहीं भूल सका पावन स्मृतियों को,
जब से मैंने बहते देखा है नदियों को।

परिंदे

सवेरे सवेरे ये आते हैं रोज़,
इधर से उधर को भी जाते हैं रोज़।
अकेले दुकेले या फिर झुंड में,
उड़ते परिंदों को किस की है खोज।

क्या भूख है इन की क्या प्यास है,
इन को ज़माने से क्या आस है।
मायूस लौटा न अब तक कोई,
न बच्चों ने उम्मीद अब तक खोई।

झगड़ा न झंझट न कोई है रोग।
उड़ते परिंदों को किस की है खोज।

इंसान रस्तों पै जब से चले,
आँखों में सब के हैं सपने पले।
कभी रुक न पाए ये बड़ते कदम,
मिल ते हैं इन को क्यूँ पत्थर सनम।

मलते हुए हाथ जाते हैं लोग,
उड़ते परिंदों को किस की है खोज।

रस्तों से मंज़िल भी मिलती नहीं,
क़िस्मत की चक्की भी हिलती नहीं।
भले बागवाँ उम्र खोता रहा,
दिल में कली कोई खिलती नहीं।

हक़ मार कर कुछ चढ़ाते हैं भोग,
उड़ते परिंदों को किस की है खोज।

किसी की कहीं अबरू लुट गई,
कोई मार डाला या दम घुट गई।
तेज़ाब से जल गई एक कली,
सूरत ही अच्छी न नीयत भली।

हर दिन चिताएँ जलाते हैं लोग,
उड़ते परिंदों को किस की है खोज।

बहती हवा गर्म रुकती नहीं,
कभी शर्म से आँख झुकती नहीं।
सीना फुलाए चले जा रहे,
कदम ज़िंदगी के जले जा रहे।
यही सिलसिला अब भी चलता है रोज़,
उड़ते परिंदों को किस की है खोज।

जिंदा दिल

जो सोचा हासिल होगा,
आज नहीं तो कल होगा।
रस्ता कब आसान रहा,
ज्यादा क्या मुश्किल होगा।

मौसम की मर्जी अपनी,
कभी गरम तो कभी नरम।
जो न रुके तूफ़ानों से,
उनका ही साहिल होगा।

सिर्फ़ किनारे पर बैठा,
क्या जाने सागर क्या है।
जो जा डूबा लहरों में,
नादाँ या जाहिल होगा।

टकराने का शौक़ नहीं,
बचना हम को आता है।
क्या मालूम कल साथ मेरे,
हमराह कोई माहिल होगा।

सिर्फ़ भरोसा उसका है,
इस अंजान मुसाफ़िर को।
हाथ मिलेगा उससे ही,
जो भी जिंदा दिल होगा।

प्रकृति और प्राकट्य

बाजी जब तेरी पायल,
झील पै आ छाए बादल।
लगी तड़पने बिजली भी,
लहराया तेरा आँचल।

श्वप्न सभी साकार हुए,
बंधन सब बेकार हुए।
गई उदासी कहाँ किधर,
हवा में था स्पर्श अधर।

कलियों ने पलकें खोलीं,
देखें कैसा है काजल।

सारा मौसम बदल गया,
देखा सब ने रंग नया।
लगी बरसने बर्षा भी,
प्यासा तन मन तरसा भी।

कोई रोके क्या रोके,
थे पागल भँवरों के दल।

रात चाँदनी थी कैसी,
मल-मल में लिपटी जैसी।
चाँद ने झाँका खिड़की से,
सामने थी पारियों जैसी।

बदन तराशा लगता था,
संगमरमरी ताज महल।

सुबह सवेरे की लाली,
ज्यों वर्षा में हरियाली।
धूप में छाँव मिली जैसे,
गोरी गाँव चली जैसे।

नदियों ने दी राह बदल,
झरने बहते कल कल कल।

कोयल चुप रहती कैसे,
सारा कुछ सहती कैसे।
कुह-कुह बोली कोयलिया,
सच में कान्हा हो छलिया।

सरिता का बहता पानी,
हो जाता है गंगाजल।

जागते रहो

कोई याद करे न करे,
हम उनको भूलें कैसे।
जो काटों के साथ जिए,
खुद थे वो फूलों जैसे।

वक़्त ने अपना काम किया,
लेकिन जो ठहरे न कभी।
अब उन जैसे लोग नहीं,
है फिर भी पहचान अभी।

हुए वतन पर जो क़ुर्बान,
लोग नहीं मिलते ऐसे।

लाख बलाएँ आईं थीं,
लाख मुसीबत पाईं थीं।
जालिम लोगों ने उनपर,
तौहमत लाख लगाईं थीं।

आजादी के वक़्त जो देखे,
रंग हैं ग़ायब अब वैसे।

आज वतन की आन पै फिर से,
कौन जो दाग लगाते हैं।
देश की फ़िक्र नहीं जिसको,
वो शासक बन जाते हैं।

है सीने में आग वही,
सुलगी थी वर्षों जैसे।

अगर न होश अभी आया,
डस लेगी काली छाया।
पाए कितने ज़ख़्म कहो,
समझ नहीं कुछ भी आया।

ये आपस की फूट दुबारा,
रहने देगी क्या ऐसे।

रोग पुराना लोग नए हैं,
ज़ख्म पुराने भूल गए हैं।
बेसुध लोग कहाँ जानेंगे,
जो फाँसी पर झूल गए हैं।

राह दिखाने कुछ समझाने,
जाता हूँ मीलों जैसे।

देखो दूर सँवारा किसने,
अपना हर कोना-कोना।
सुन लो आज पुकारा किसने,
था संभव कब ये होना।

अगर असंभव नहीं तो फिर,
क्यों दिखते हो तुम वैसे।

रहो जागते सो मत जाना,
बस बातों में खो मत जाना।

देश बनाना है हाथों में,
बर्बादी है एक बहाना।

वक्त जगाता है हम सबको,
ठहर न पाएगा ऐसे।
कोई याद करे न करे,
हम उनको भूलें कैसे।

सवेरा

जाने कब से रहा है जल,
तू सूरज है तू न पिघल।
रहा अंधेरा जीता छल,
आगे-आगे चलता चल।

अब दिन में सब दीख रहा,
आज अंधेरा चीख रह।
अब वो काली रात कहाँ,
पहले वाली बात कहाँ।

घात लगाए थे वो कल,
तू बस आगे चलता चल।

किसने दर्द सहा कितना,
किसको मर्ज रहा कितना।
दवा समझकर जहर पिया,
किसने किसका साथ दिया।

अब सब हाथ रहे हैं मल,
तू बस आगे चलता चल।

किसने कितना कब जोड़ा,
सब ने मौंन कहाँ तोड़ा।
ये टूटे सपने किसके,
छुपे खजाने हैं उसके।

छल बल का कितना दलदल,
तू बस आगे चलता चल।

कितनी मंजिल शेष अभी,
आते हैं दरवेश कभी।
जागे तभी सवेरा है,
जब सूरज का फेरा है।

लहर रही है आज मचल,
तू बस आगे चलता चल।

मजबूर हुआ मज़दूर

मैं खुश हूँ लिख भेज दिया है,
खाने में परहेज़ किया है।
अम्मा को समझाते रहना,
अपना हाल बताते रहना।

ढूंढ़ लिया है एक ठिकाना,
देख रहा हूँ नया जमाना।
आप उदासी पास न लाना,
प्यार से बच्चों को समझाना।

मुश्किल तुम्हें भुला के रहना,
अपना हाल बताते रहना।

बहुत अधिक है यहाँ रौशनी,
लेकिन चेहरे बुझे हुए हैं।
हो जाती है बहुत कमाई,
फिर भी लगता लुटे हुए हैं।

क्या बच पाए मुश्किल कहना,
अपना हाल बताते रहना।

धनीराम से कुछ लाया था,
मुश्किल ब्याज चुका पाया था।
थोड़े पैसे भेज रहा हूँ,
मुश्किल तेरी देख रहा हूँ।

थोड़ा बहुत बचाते रहना,
अपना हाल बताते रहना।

कल की सब्जी अभी पड़ी है,
वर्षा कम है मगर झड़ी है।
सबको जल्दी बहुत पड़ी है,
पर जीने की जंग बड़ी है।

आप किसी से कुछ ना कहना,
अपना हाल बताते रहना।

भेजी मैंने एक घड़ी है,
तेरी चूड़ी पास पड़ी है।
कुछ छोटी है आ जाएगी,
तेरे मन को भा जाएगी।

मैंने भी कल कुर्ता पहना,
अपना हाल बताते रहना।

मन करता है उड़कर आऊँ,
सबकी ख़ातिर क्या-क्या लाऊँ।
कुछ दादा गुडिया को देना,
अम्मा से कुछ और न कहना।

चाचा के घर जाते रहना,
अपना हाल बताते रहना।

वक़्त

वक़्त की बात है वक़्त के हाथ है,
कभी है जुदाई कभी साथ हैं।
हो गई ज़िंदगी भी कभी बोझ सी,
किसी के लिए सिर्फ़ सौगात है।

हो गए कुछ जुदा हो गए कुछ ख़फ़ा,
कोई अपना हुआ या हुआ बेवफ़ा।
बात कुछ भी नहीं है बेचैन मन,
एक जान अब थे रह गए दो बदन।

दिन में अंधेरा कभी छा गया,
कभी रौशनी से भरी रात है।

नींद आती नहीं है कभी रात भर,
किसी को खुशी ही मिली उम्र भर।
जो रस्ते पुराने थे देखे हुए,
चलते हुए आज लगता है डर।

बदली फ़िज़ाँ का पता कुछ नहीं,
था जिन पर भरोसा वहीं घात है।

भूल जाऊँ किसे याद आऊँ किसे,
किसको है फ़ुर्सत बताऊँ किसे।
हैं यादों के साए बड़े बेरहम,
ये किस्से पुराने सुनाऊँ किसे।

कभी बात कोई जो सुनता न था,
वही कह रहा वाह! क्या बात है।

किस पर भरोसा करें उम्र भर,
हैं सारे नहीं बेवफ़ा ही इधर।
कोई महरबाँ हो गया बेवजह,
कोई है परेशा झुकाली नज़र।

वक़्त की बात है वक़्त के हाथ है,
कभी है जादुई कभी है साथ है।

नए दौर की अब नई है फ़सल,
कल दौर था आज हालात है।

यत्र तत्र सर्वत्र

टूटे ना लय जीवन की,
छूटे ना ये हाथ तेरा।
पथ प्रशस्त करते रहना,
तुम पर है विश्वास मेरा।

चाहे पर्वत अचल खड़े हैं,
चाहे सागर मचल रहा।
चाहे झरने बहें निरंतर,
चाहे लावा उबल रहा।

व्याप्त मौन में तुम्हीं संभालो,
है ऐसा इतिहास तेरा।

इंसानों की इस दुनियाँ में,
संभव और असंभव है।
लेकिन ज्यादातर पाना है,
कुछ देना सीखा कब है।

फिर भी कुछ लोगों के दिल में,
होता है आभास तेरा।

कभी परिंदे उड़ते नभ में,
कभी शीत में काँपे हैं।
लेकिन वस्त्र सभी को तूने,
स्वयं स्वनिर्मित बाँटे हैं।

कभी खुशी के क्षण लगते हैं,
कभी मिला संताप तेरा।

पाप पुण्य के मध्य फँसा हूँ,
चेतन और अचेतन में।
चाहे हो दुनियाँ का मेला,
व्याप्त है तू ही निर्जन में।

नहीं अकेला मैं रह सकता,
जब तक है दिन-रात तेरा।

यहाँ-वहाँ और कहाँ-कहाँ तक,
तू ही तू और तू ही तू।
कोई कहता राम सदा शिव,
कोई कहता अल्लाहू।

यत्र तत्र सर्वत्र तू ही है,
हर पल हो बस साथ तेरा।
टूटा ना लय जीवन की,
छूटे ना ये हाथ तेरा।

रोग पुराना

तुम जो भी तक़रीर करो,
क्यों हम वो तश्वीर बनाएँ।
तुम कितने भी रंग दिखाओ,
क्यों दामन पर दाग लगाएँ।

कितनी बार तुम्हें अज़माया,
फिर भी कहते हमें भुलाया।
काठ की हाँडी वही पुरानी,
सबने हलुआ बाँटा खाया।

बने बाग़वाँ लूट रहे थे,
हर मौसम की फ़सल चमन की।
याद है हमको बात पुरानी,
याद है सबको शक्ल वतन की।

आज हवा रुख़ बदल रही है,
तबियत थोड़ी संभल रही है।
लगे चीखने ज़ख़्म पुराने,
वही पुरानी तलब रही है।

अब तो मौसम बदल रहा है,
पिछला तूफ़ाँ अभी गया है।
परिवर्तन में देर लगेगी,
शायद अच्छी हवा बहेगी।

तुम किस की क्या पीर हरोगे,
हैं वही पुराने रोग बलाएँ।
अब ज्यादा हुंकार न भरना,
जरा संभलना टूट न जाएँ।

चाहे जितना जोर लगा लो,
समय चक्र नहीं रुकने वाला।
आज तराजू तोल रही है,
और न पलड़ा झुकने वाला।

पूछ रहे हो प्रश्न किसे तुम,
छुपे राज सब अपने खोलो।
घर का हाल हुआ क्यों ऐसा,
झूठ छोड़कर अब सच बोलो।

स्वार्थ छोड़ कर्तव्य निभाओ,
खुद को साबित कर दिख लाओ।

देशराग

हँसते-हँसते रो पड़ते हो क्यों,
रोते-रोते हँसना भी सीखो।
मासूम का दिल ये किसने तोड़ा है,
किसी के दिल में बसना भी सीखो।

मंदिर मस्जिद जाना अच्छा है,
श्रद्धा के हैं फूल चढाना अच्छा है।
चन्दन वंदन और अजान हुई,
साथी तो भगवान ही सच्चा है।

नफरत के संग कहाँ इबादत है
प्रेम की माला जपना भी सीखो।

क्यों नफरत का रोग ये पाला है,
आज का काम क्यों कल पर टाला है।
इंसानों के अन्दर रब रहता है,
उसे सताओ कौंन ये कहता है।

क्या राह छोड़ कर मंजिल मिलती है,
मजलूम को राह दिखाना भी सीखो।

आज नहीं तो कल ये होना है,
घना अंधेरा एक दिन खोना है।
ये सत्ता का संघर्ष नहीं अच्छा,
हो जनता का काम जो होना है।

राह में कब तक रोड़े डालोगे,
सच का साथ निभाना भी सीखो।

जब अपनी ही नजर नहीं अच्छी,
देशप्रेम की लगन नहीं सच्ची।
खुद को प्रेम पुजारी कहते हो,
जाने किस दुनियाँ में रहते हो।

हो मालूम नींद से जगना ही सीखो,
मासूम दिलों में बसना भी सीखो।

नीली चादर

आसमान की नीली चादर,
यहाँ वहाँ फैली कैसी।
बढ़ता जाता धुँध धुआँ क्यों,
है चादर मैली जैसी।

घूम रहे हैं गोल गुब्बारे,
सारे नीले अंबर में।
बंधे हुए हैं एक दूजे से,
पर चादर के अंदर हैं।

लेकिन सारे निर्जन क्यों हैं,
लगते सारे लुटे हुए।
इधर धरा पर लोग बहुत हैं
लूट पाट में जुटे हुए।

वहाँ न कोई जीव जंतु है,
ना झरने बाग बगीचे हैं।
पत्थर धूल उड़ाने वाले,
अब भी आँखें मींचे हैं।

दूर से दृश्य दिखाई देते,
सुंदर चाँद सितारों के।
हाल बुरे हैं छोड़ के धरती,
बे औलाद बिचारों के।

यहाँ धरापर इंसानों ने,
क्या से क्या कर डाला है।
काटों का दामन थामा है,
तोड़ी प्रेम की माला है।

मजहब की दीवार उठाकर,
घर छोटा कर डाला है।
नफ़रत हिंसा अपराधों का,
सिक्का खूब उछाला है।

बजती है खतरे की घंटी,
बहरे कान नहीं सुनते।
नीली चादर जर्जर होती,
उसके तार नहीं बुनते।

जाने कब ये दुनियाँ वाले,
मिलकर कसम उठाएँगे।
ज्यादा देर हुई तो एक दिन,
सभी दफ़न हो जाएँगे।

घूमेगी फिर बंजर धरती,
नीली चादर के नीचे,
कहने वाले कहाँ रहेंगे,
जाएँगे आँखें मींचे।

अभी समय है क़सम उठाओ,
हंसते गाते इंसानों।
धड़क रहा धरती का सीना,
नब्ज ज़रा तो पहचानो।

स्वर्ग से सुंदर पावन धरती,
रत्न भरी थैली जैसी।
आसमान की नीली चादर,
यहाँ वहाँ फैली कैसी।

जादूगर

एक अनोखा जादूगर है,
सारी दुनियाँ जिसका घर है।
नजर न आता कहाँ किधर है,
उसकी सब पर मगर नजर है।

घर है पर दीवार नहीं है,
दरवाजा दरकार नहीं है।
छत हर ओर दिखाई देती,
जाना सबको डगर नहीं है।

इस दुनियाँ में वही निडर है,
एक अनोखा जादूगर है।

छल से छला नहीं जाता है,
बल की सीमा कहलाता है।
ज्ञानी समझ नहीं पाते हैं,
ध्यानी रोज उसे ध्याते हैं।

संतोषी का वही सबर है,
एक अनोखा जादूगर है।

हो अभिमान उसे खलता है,
बस दिन-रात वही चलता है।
निर्भय भक्त सदा रहते हैं,
उसकी बात सभी कहते हैं।

सच में वो सबसे ऊपर है,
एक अनोखा जादूगर है।

जहाँ नहीं वह जगह बताओ,
कब देखा था समय बताओ।
कब वो पास नहीं होता है,
क्यों विश्वास नहीं होता है।

कितनों को बस अगर मगर है,
एक अनोखा जादूगर है।

हमारा भारत

जो भारत की शान बढ़ाए,
उसकी शान ज़रूरी है।
विश्व तिरंगा जो फहराए,
उसका मान ज़रूरी है।

तूफ़ानों में दीप जलाना,
अंधकार को दूर भगाना।
देश की खातिर मर मिट जाना,
देखा हमने एक जमाना।

ऐसी बातें कौन भुलाए,
इसका भान ज़रूरी है।

वीर शिवा राणाप्रताप ने,
रानी झाँसी के अलाप ने।
वीर भगत नेता सुभाष ने,
चन्द्रशेखर और अश्फ़ाक ने।

आज़ादी के गीत सुनाए,
उनका गान ज़रूरी है।

देश की खातिर बहुत ज़रूरी,
देश प्रेम का अभिवादन।
देश के अंदर लानी होगी,
न्याय व्यवस्था अनुशासन।

न्याय न अंधा होने पाए,
इस का भान ज़रूरी है।

घर के अंदर छुपे नाग को,
या दामन पर लगे दाग को।
जहर रसायन हुए झाग को
कामी के संग हुई फाग को।

जो भी इनका साथ निभाए,
दुष्परिणाम ज़रूरी है।

सत्ता का भूखा नेता हो,
अभिनय बिन जो अभिनेता हो।
शब्दों से जो भ्रम देता हो,
माल कमाकर यश लेता हो।

आने वाली हर पीढ़ी का,
उनपर ध्यान ज़रूरी है।

कौन यहाँ कितने पानी में,
फर्क है लंपट और ज्ञानी में।
मर्यादित हो जहाँ आचरण
दर्शन दुर्लभ अभिमानी में।

जोश में होश न खोने पाए,
इसका ज्ञान ज़रूरी है।

मिलकर सारे देश बनाएँ,
देश का परचम फिर लहराएँ।
विजयी विश्व तिरंगा गाएँ,
विश्व बंधु का फ़र्ज़ निभाएँ।

हों अभेद्य अपनी सीमाएँ,
वो सामान ज़रूरी है।

सैनिक ने सम्मान सँवारा,
उसका सारा फ़र्ज़ हमारा।
धरती धर्म किसान सभी है,
भारत सबसे अलग तभी है।

भूलो बात पुरानी सारी,
अब उत्थान ज़रूरी है।

देश प्रदेश यही है भारत,
उद्यम खेती में पारंगत।
दुर्लभ दान यही होता है,
जगहित बीज यही बोता है।

जो हाथों को काम दिलाए,
वो विज्ञान ज़रूरी है।
जो भारत की शान बढ़ाए
उसकी शान ज़रूरी है।

टकराने या अड़ जाने में,
हो शामिल कुछ बुद्धि विवेक।
रखो धैर्य या त्वरित काम से,
मिल जातीं हैं राह अनेक।

अमिट नाम हैं शिला लेख में,
रहे अनौखे जिन के ढ़ंग।

मौसम यादों का

तन्हाई में जब भी उस का दिल घबराएगा,
मेरी यादों का मौसम फिर लौट के आएगा।
ठंडी एक हवा का झोंका तन को छू लेगा,
फिर से कोई बादल घिर कर सावन लाएगा।

होता नहीं सभी कुछ बस में चाहत होती है,
देख कभी नभ के तारों को राहत होती है।
कोई सपना दिल में छुप कर दिल सहलाएगा,
मेरी यादों का मौसम फिर लौट के आएगा।

झील किनारों की वो मस्ती थे जब दोनों साथ,
ना कोई रस्ता ना मंज़िल थे हाथों में हाथ।
पीछे छूट गए जो लम्हे कौन भुलाएगा,
मेरी यादों का मौसम फिर लौट के आएगा।

मन चाहा मनमीत किसी का सर सहलाता है,
और कभी जीवन का साथी नज़र घुमाता है।
कोई सिर्फ़ ख़यालों में ही राह दिखाएगा,
मेरी यादों का मौसम फिर लौट के आएगा।

राह में चलते ठोकर ने जब राह दिखाई थी,
और किसी के होठो से क्यों आह सुनाई दी।
लंबा वक्त गुजरने पर भी ज़ख्म न जाएगा,
मेरी यादों का मौसम फिर लौट के आएगा।

सारे साथी छूट चुके अब घिर आई है शाम,
लेकिन साँसों को हैं अब भी याद पुराने नाम।
तेरे मन की कितनी उलझन वो सुलझाएगा,
मेरी यादों का मौसम फिर लौट के आएगा।

बंधन

तारों की चूनर को ओढ़े,
निशा धरा पर आई है।
कुछ लोग कहें आगे पीछे,
ये सूरज की परछाई है।

है सत्य यही सब ने देखा,
है सत्य कहीं सीमा रेखा।
ये सत्य उजागर है फिर भी,
है सत्य कहीं पर अन देखा।

ये सारा जगत उसी का है,
ये जग उस की अमराई।

जो सूरज बन कर जलता है,
जो शाम को हर दिन ढ़लता है।
जो पर्वत बन कर अचल खड़ा,
जो सब के अंदर मौन पड़ा।

ये किसने बेल लगाई है,
वो देख कली मुस्काई है।

कुछ लगता पहली बार कहीं,
कुछ लगता कितनी बार यही।
इस प्यार में जीत या हार नहीं,
ये प्यार न हो हर बार कहीं।

इस दिल ने तड़प दिख लाई है,
कहीं देख घटा घिर आई है।

था अंजाना पथ आप मिले,
अब दूर हों शिकवे और गिले।
एक शाख़ ज़रा जब हिलती है,
तब चैन की नींद न मिलती है।

ये पटल तेरी अंगड़ाई है,
ये कलम ज़रा लिख पाई है।
तारों की चूनर को ओढ़े,
निशा धरा पर आई है।

सावधान

हर मौसम की बात अलग है,
हर मौसम के अपने रंग।
थोड़ा सा अपना डंग बदलो,
कभी न करना इस से जंग।

अब सरदी की बारी आई,
थोड़ा वक्त उसे भी दो।
बच कर रहना ही अच्छा है,
वर्षा साथ हवा भी हो।

सरदी गर्मी बरसातों का,
तय होता है पूर्ण विधान।
थोड़ी देर संभालो खुद को।
ये जीवन भी है वरदान।

नव गीत

(विदाई २०२४)

जोश ज़िंदगी का है होश हम सभी को है।
मुस्कराती ज़िंदगी आज हम को चाहिए।

राह हैं नई-नई साथ हैं कई-कई,
झूठ साथ छोड़ कर बात हों सही-सही।
हो चमन खिला-खिला हो वतन मिला-मिला,
जागते रहो कहीं टूट जाए सिल-सिला।

हम भी गुन गुनाएँगे आप गीत गाईए,
मुस्कराती ज़िंदगी आज हम को चाहिए।

छेड़ छाड़ छोड़ दो बेड़ियों को तोड़ दो
आ रहीं हैं आंधियाँ उन की राह मोड़ दो।
तेज चल ठहर कही गाँव और शहर कही,
सिर्फ़ प्यार देश का हो शृंगार देश का।

दुश्मनी की आग से हाथ को बचाइए,
मुस्कराती ज़िंदगी आज हम को चाहिए।

दूर-दूर था गगन हैं वहाँ पर आज हम,
साथ-साथ हो कदम है नया-नया चमन।
नींव जो हिली नहीं राह जो मिली नहीं,
चाह थी रहे महक पर कली खिली नहीं।

बाग़वा जो थे नहीं उन को क्या निभाईयें,
मुस्कराती ज़िंदगी आज हम को चाहिए।

वक्त आज जा रहा वक़्त कल का आ रहा,
जो हुआ वो याद रख कल के और स्वाद चख।
रो न बीते हाल पर देख फूल डाल पर,
लिख के शब्द छोड़ दे वक्त के कपाल पर।

ठीक जो हुआ नहीं किस तरह भुलाइये,
मुस्कराती ज़िंदगी आज हम को चाहिए।

भाव पुष्प

(व्यंग रचना)

हे भारत माँ तेरी जय हो तेरे हैं बहु रूप,
तेरे बच्चे हैं सभी संत असंत अनूप।

उछल-उछल कर मुँह को नौचें रोज़ कराएँ झगड़े,
कितने हैं मासूम ये बच्चे भक्त तेरे हैं तगड़े।

हे भारत की पावन जनता और न कोई जग में,
अब तक भेद किया कब तूने एक डाकू या ठग में।

जो सब घर का बोझ उठाए नींद उसे ना आए,
वो भी तेरा बड़ा दुलारा खाली गाल बजाए।

सहन शक्ति की हुई परीक्षा तू ही अव्वल आई,
सारा जगत् चकित होता है निंदिया नहीं गँवाईं।

तेरा घर हर रोज़ लुटेरे घर में रह कर लूटें,
है संरक्षण यहाँ सभी को देख पसीने छूटें।

शाम हुई निस दिन करता हूँ तेरी मैं अरदास,
तेरी महिमा जाने तू ही शब्द न मेरे पास।

डाल-डाल पर और पात-पात पर बैठे काग उलूप,
है भारत माँ तेरी जय हो तेरे हैं बहू रूप।

दृश्य अदृश्य

वो ही अचल सचल है कितना,
विश्व भ्रमण करता रहता।
कहीं हुआ पाषाण कहीं पर,
कल-कल कर बहता रहता।

मन के अंदर तन के अंदर,
अंधियारे उजियारे में।
सागर की गहराई में,
छत पर और चौबारे में।

कोई कहता पास है मेरे,
कोई दूर बहुत कहता।
पर्दे के इस ओर अंधेरा,
उधर दीप जलता रहता।

अपनी दौड़ दिखाई देती,
बाक़ी लगती उड़ती धूल।
काटे फूल सभी डालों पर,
सच वो और कही है भूल।

समझ न आता पर समझाता,
भटक रहा है जाने कौन।
अंदर वो है बाहर वो है,
है वाचाल मगर है मौंन।

दृश्य वही अदृश्य मगर है,
खोजो वो है यहाँ-कहाँ।
मुझको लगता साथ है मेरे,
कभी यहीं है कभी वहाँ।

हारा थका अभी घर पहुँचा,
सुबह चला था अब है शाम।
दो शब्दों में लिख भेजी है,
मैने पाती उसके नाम।

बिरले लोग

इस दुनियाँ में कुछ लोगों ने,
मात्र कर्म को ध्येय बनाया।
बिना किसी पर दोष लगाए,
काम नया करके दिखलाया।।

सत्य काम दिल में धारण कर,
अपने छालों को न दिखाया।
सच के ऊपर रहा न पर्दा,
फिर इतिहास निकल कर आया।।

औरों पर इल्जाम लगा कर,
और बहाना नहीं चलेगा।
जाल लिए फिरता है दिन भर,
सिर्फ़ धूप में जिस्म गलेगा।।

पाप-पुण्य का फल जीवन में,
होता रहता और सवाया।
इस दुनियाँ में कुछ लोगों ने,
मात्र कर्म को ध्येय बनाया।।

जे.पी. तोल तराजू में सब,
कितना सच और झूठ कहाँ है।
जीने का अन्दाज बदल कुछ,
दर्पण दिल में देख यहाँ है।।

कर्तव्य पथ

सोच कर बोलना लब तभी खोलना,
बोल कर जो मिला दिल में ये तोलना।

हम अकेले चले, स्वप्न थे कुछ पले,
लोग कुछ हँस दिए, लोग थे कुछ भले।

वक्त की बात थी, चाह भी साथ थी,
थी कहीं धूप छाँव, या कहीं रात थी।

धूल उड़ती रही, प्यास बड़ती रही,
उम्र गलती रही, धूप चढ़ती रही।

ज़िंदगी का सफ़र, जा रहा था किधर,
थे इधर रास्ते और मंज़िल उधर।

कल हुआ हाल क्या, कट गया जाल सा,
दिन महीने हुए, हो गया साल सा।

फिर खिलेगी कली, धूप होगी भली,
हो रही है विदा, प्रीति सूनी गली।

सिलसिला आम है ना ज़हर घोल ना,
सोच कर बोलना लब तभी खोलना।

मेरा आदर्श

देश भुला कर अपनी ज़िद को,
जो भी सर्वोपरि मानें।
भारत वासी हर नेता को,
अपना नेता क्यों मानें।

जिन के दिल में नहीं तिरंगा,
शुभ्र हिमालय पावन गंगा।
बैसाखी पर डोल मृदंगा,
विश्व बंधुता का मन चंगा।

भारत की मिट्टी की खुशबू,
गाँव खेत ना पहचानें।
भारत वासी हर नेता को,
अपना नेता क्यों मानें।

वीर शिवाजी रानी झाँसी,
राणा की हुंकार न भासी।
आजादी की बलि बेदी पर,
चढ़े भगत सिंह हँस कर फाँसी।

ये सारा बलिदान भुला कर,
वो भारत को क्या जानें।
भारत वासी हर नेता को,
अपना नेता क्यों मानें।

था सुभाष का नारा प्यारा,
सब कहते थे देश हमारा।
बिस्मिल और आज़ाद सभी को,
दुर्गा भाभी कहें दुलारा।

गीत देश के प्रीति देश की,
छेड़ीं कई नई तानें।
भारत वासी हर नेता को,
अपना नेता क्यों मानें।

अटल रहा विश्वास हमारा,
कुछ लोगों ने किया किनारा।
लेगा फिर से जन्म दुबारा,
पथिक अडिग जो कभी न हारा।

देश करे बदनाम कोई भी,
उस को दुश्मन ही जानें।
भारत वासी हर नेता को,
अपना नेता क्यों मानें।

गांधी जी आदर्श हमारे,
लोह पुरुष थे अडिग न हारे।
है मशाल जलती हाथों में,
अब अपनी पहचान बता रे।

आन देश की रखने को,
कुर्बान हुईं कितनी जानें।
भारत वासी हर नेता को,
अपना नेता क्यों मानें।

बंधन

सब की चिट्ठी लिखी रखीं है,
अभी पता लिखना बाक़ी है।
है मरघट ही एक ठिकाना,
हर डोली आश्रय पाती है।

मिट्टी ने चिट्ठी लिख भेजीं,
उड़ कर पंछी गया कहाँ पर।
उसकी खबर मुझे भी देना,
उसकी बातें बहुत यहाँ पर।

मौंन साधना का अभ्यासी,
चला गया है दूर यहाँ से।
मुझें न मिलता पता ठिकाना,
हूँ बंधन में मुक्त कहाँ से।

बंद गाली

शहर के इस शोर से हम ऊब जाते हैं,
गाँव की मिट्टी के घर अब याद आते हैं।

छोड़ कर हम आ गए वो छाँव पेड़ों की,
ये परिंदे कब घरों से दूर जाते हैं।

अब कई बूढ़े शहर मैं साथ रहते हैं,
वो वहाँ ऊँचे मकां अब मुंह चिढ़ाते हैं।

वक्त जैसे कट रहा है आज कल सब का,
क्या देखता है उस तरफ़ मेहमान आते हैं।

मुफ़लिसी में कौन किस को याद करता है,
रात को अब दूर तारे नज़र आते हैं।

जिस्म में ताक़त नहीं अब खून है पानी,
रंज दिल के गर्म आंसू क्यूँ बहाते हैं।

वक्त ने अब बंद कर दी सामने खिड़की,
उस तरफ़ से आप क्यूं अब नज़र आते हैं।

अब चलो जे.पी. चलें उन तंग गलियों में,
इस शहर के लोग जल्दी भूल जाते हैं।

अफ़सोस

कई दौर गुजरे यही दास्ताँ है,
यही है ज़मीं वो यही आसमाँ है।
महीनों जली थी चिता ज्ञान की जो,
जला इतना कोई कहीं भी कहाँ है।

घर को बचाना नहीं जुल्म होता,
जगे भेदिये थे रहा देश सोता।
हुई लूट कितनी सब को पता है,
रहे घर लुटेरे किस की खता है।

हुए जुल्म से आप अंजान क्यों हैं?
हो लूट फिर से ये अरमान क्यों है?
तुम्हीं हो वो नादान पहचान क्यों है?
लुटेरों का हम पर अहसान क्यों है।

एक दौर गुज़रा एक दौर आया,
चुका मूल और ब्याज बाक़ी बकाया।
थी जेब खाली कर्जा सवाया,
थी लूट कैसी समझ में न आया।

है अफ़सोस मुझ को ये है इल्म कैसा,
होता रहा है यहाँ जुल्म कैसा।
आदत न बदली अब भी हमारी,
नचाते रहे हैं मिल कर मदारी।

बदला है मौसम सर्दी बड़ी है,
आगे की राहों में मुश्किल खड़ी है।
कोई रात-दिन जाग बनाता है घर को,
अफ़वाह से वो डराता है सब को।

संसद में देखो ज़ुबा बेज़ुबा है,
कई दौर गुजरे यही दास्ताँ है।

जी हाँ शौक़ है।

उसूलों का है ज़िक्र अब किस लिए,
फूलों की है फ़िक्र अब किस लिए।

जलाए कहाँ थे ये बुझते दिए,
आँधी को ये फ़िक्र है किस लिए।
दिया था सहारा बनाया शिकार,
अब बाज की फ़िक्र है किस लिए।

हर रोज़ मिल कर बुनते थे जाल,
अब जाल की फ़िक्र है किस लिए।
सूखे शजर पर भी गुल खिल गए,
बहारों की ये फ़िक्र है किस लिए।

गुमनाम बस्ती भी मस्ती में है,
तूफ़ान को फ़िक्र है किस लिए।
शरीफ़ों को बोलो न खोलें जुबा,
अब दर्द का ज़िक्र है किस लिए।

जिन की रगों में सियासत रही,
तलबगार की फ़िक्र है किस लिए।
है शौक जे .पी . को लिखता रहे,
इशारों की फिर फ़िक्र है किस लिए।

अथक प्रयास

जब नहीं हो राह कोई,
साध लो तब लक्ष कोई।
बह न पाया जो लहर में,
टिक सकेगा वो भँवर में।

रास्ते माना कठिन है,
दूर जाने का जतन है।
पा सका मंज़िल वही बस,
सत्य ऐसा ही कथन है।

समझ जब आता नहीं कुछ,
त्याग दो प्यारे सभी सुख।
टिक सकेगा तब कहाँ दुख,
दुख छुपा लेगा स्वयं मुख।

आईने को छोड़कर,
चल गिरेबाँ झाँकते हैं।
थक न जाना रुक न जाना,
फिर निशाना साधते हैं।

दे शिवा वरदान जिस को,
क्या असर होगा ज़हर में।
बह न पाया जो लहर में,
टिक सकेगा वो भँवर में।

कोई देख रहा है

कृपा करो शनि देव तुम सम द्रष्टा नहीं भेद,
नज़र न आते समझ बिन किस थाली में छेद।

मिटे अंधेरा रहे उजाला,
अच्छी बात पुरानी है।
ईश्वर को सबके कर्मों की,
अगली किश्त चुकानी है।

सूरज डूबा नहीं अभी तक,
अभी अंधेरा मिटा नहीं।
कम ज्यादा का क्रम जारी है,
तोला माशा घटा नहीं।

उस को सब का हाल पता है,
ये पहचान सभी को है।
सच को झूठ दिखाता आँखें,
यह परिणाम तभी तो है।

बचपन की हैं याद अभी तक,
भूला कौन जवानी को।
राम देखता है कण-कण में,
जी कर देख कहानी को।

दृश्य दिखाई देते रहते,
बचपन और जवानी है।
मगर शाम के होते-होते,
आँख बंद हो जानी है।

मान न मान मगर ये सच है,
रोग बड़ा मन मानी है।
ईश्वर को सब के कर्मों की,
अगली किश्त चुकानी है।

नई फसल

फिर आई है सुबह नई,
हैं अन सुलझे प्रश्न कई।
घूम रही है गोल घड़ी,
सुबह हुई और रात गई।

अपने दिल की बात कहूँ,
कब तक मैं चुपचाप रहूँ।
दीवारों के लगे हैं कान,
मगर न अपना देते ध्यान।

सुनी सुनाई बात सही,
हैं अन सुलझे प्रश्न कई।

होते सुबह न होती है,
चाय की प्याली रोती है।
नीद न पूरी हो पाती,
उम्र सबर अब खोती है।

लोग मनाते जश्न कहीं,
हैं अन सुलझे प्रश्न कई।

सीख सिखाते बच्चे हैं,
हम झूठे वो सच्चे हैं।
आज सबक़ ये सीख लिया,
खाली जेब न अच्छे हैं।

मगर कमाई किधर गई,
हैं अन सुलझे प्रश्न कई।

सोचा समझा राज खुला,
जो भी घोला वही घुला।
खुद का दामन मैला था,
भरा हुआ बस थैला था।

अब घर आई फसल वही,
हैं अन सुलझे प्रश्न कई।

हक़ीक़त और फ़साना

कौन है ऐसा यहाँ पर,
हो नहीं जिसकी कहानी।
है कहीं मौसम सुहाना,
है कहीं पर आग पानी।

जो घृणा का भार लेकर,
बस मिटाने पर तुले हैं।
उम्र बोझिल है उन्हीं की,
मुश्किलों के सिलसिले हैं।

देखता कोई उजाला,
क्या अंधेरे की रवानी।

प्यार की पाती किसी ने,
खोल कर देखी नहीं है।
हृदय की ज्वाला जलाती,
चैन भी लेती नहीं है।

चाहतों में बस धुआँ है,
ज्योति कब उसको जलानी।

है कहानी फूल की भी,
है कहानी खार की भी।
बात है कुछ दुश्मनों की,
बात हैं कुछ यार की भी।

व्यग्रता है उग्रता है,
ज़ख्म हैं केवल निशानी।

बात उन की ख़ास है,
चाह में आकाश सारा।
वो पथिक रुकता कहाँ है,
मुश्किलों से भी न हारा।

लहर में है गरज उसकी,
है कहाँ बिजली गिरानी।

एक है उसकी हक़ीक़त,
हर तरफ़ इनका फ़साना।
बस गई दुनिया किसी की,
मिट गया कोई घराना।

काम की वो ज़िंदगी है,
काम की उसकी जवानी।
कौन है ऐसा यहाँ पर,
हो नहीं जिसकी कहानी।

फैला नशा शराब का

उठा ये जाम मीना मय,
अपने पास रख साक़ी।
रहने दे अभी इस गाँव की,
मिट्टी अभी बाकी।

चले आए हैं कितनी दूर,
भूले हैं अदब सारे।
खोई महक फूलों की,
लगता जीत कर हारे।

नशे में झूमते दिन में,
चलती रात भर चाखी।

जहाँ थी सादगी पहले,
रहते लोग अब शहरी।
चमक है ये अंधेरों की,
है दिल में वेदना गहरी।

कहाँ हैं वो मेरे अपने,
मिलती थी जहाँ छाती।

दिखाते लोग कुछ यारी,
मगर है पेच बातों में।
ज़हर का यूरिया काफ़ी,
बहुत है धान खेतों में।

माँ से बात कम होती,
खाते हैं क़सम माँ की।

उगाई है फ़सल कैसी,
बरसेगा कहाँ पैसा।
शहर से गाँव तक फैला,
लगा है रोग ये कैसा।

फीकी रह गई होली,
पी है रात भर काफ़ी।

माला टूट कर बिखरी,
रिश्ते छूट कर सिमटे।
रसीले बोल हैं खट्टे,
बजते रात भर चिमटे।

बदले नाम कुत्तों के,
मोती हो गया रॉकी।
उठा ये जाम मीना मय,
अपने पास रख साक़ी।

उद्घोष

रात का संताप छोड़ो रौशनी का खेल खेलें,
अधखिले मेरे चमन को अब बहारें गोद लेलें।

अब कहानी वो लिखें हम याद जो इतिहास रक्खे,
पर क़रीने की जगह पर हों नहीं बे मेल सिक्के।

आज दिल के आइने को प्यार से उजला बना लें,
और मेरी चाहतों का अर्थ भी सीधा निकालें।

हृदय की सुर ताल सबकी एक लय में ही मिली हो,
रौशनी इस ओर हो तो ज्योति उसके घर जली हो।

क्यों न उस के दर्द को में आज दे दूँ कुछ सहारा,
वेदना उसको अगर हो तो बहे आँसू हमारा।

दो दिलों के बीच इतनी खाइयाँ दिखती नहीं हों,
और मज़हब के तवे पर रोटियाँ सिकती नहीं हों।

तख़्तियों के लेख पर हो नाम तेरा नाम मेरा,
नाम की पहचान लेकर छा न पाए फिर अंधेरा।

मीर की ग़ज़लें कहीं तो सूर के पद गूंजते हों,
और हवा के मंद झोंके हर कली को चूमते हों।

जो अज़ानों ने पुकारा है भजन मेरा उसी को,
फ़र्क़ फिर किसने बताया इस धरा पर आदमी को।

रक्त रंजित कर दिए हैं ये युवा सपने हमारे,
ये हवा दहकी हुई क्यूँ, फूल क्यूँ हैं अब अंगारे।

ढूंढ़ना है हाथ कातिल छुप रहा है किस गली में,
ज़हर बोने पर तुला है इस चमन की हर गली में।

शान अपनी है इसी में हर खुशी ग़म साथ झेलें,
अधखिले मेरे चमन को अब बहारें साथ लेलें।

बाज़ार

तोल ताखरी सब सही,
सब की अपनी तोल।
चटका मटका भाव का,
का माटी का मोल।

जहाँ खुला व्यापार है,
राजनीति और धर्म।
समय तराजू पर तुले,
जनहित और कुकर्म।

कहे कबूतर बाज से,
तेरी बड़ी उड़ान।
बहे तेज उल्टी हवा,
कर अपनी पहचान।

जय हिंद

हो अखंड विघटन अब छोड़ो,
जय हिंद हमारा नारा है।
सब मिल कर अंबर पर लिख दो,
भारत देश हमारा है।

घोर गुलामी झेली सदियों,
घोर घना तम भी फैला।
रक्त बहाते रहे लुटेरे,
हाल न हो फिर से पहला।

अस्त रहा सदियों तक सूरज,
चमका आज सितारा है।

समय चक्र की काली आँधी,
जुल्म की वर्षा खूब हुईं।
सभी गुलामी की ज़ंजीरें,
टूटीं चकनाचूर हुईं।

जिसने सब का साथ निभाया,
पावन गंगा धारा है।

शांति प्रेम का सार सुभासित,
हमको खूब सुहाता है!
रण कौशल की क्षमता से भी
हर दुश्मन घबराता है!

हमें न छेड़ो बच कर रहना,
दुश्मन समझ इशारा है।

दीप जलाए हैं अब हमने,
बुझ न सके जो आँधी में।
कोई अपना हाथ बताए,
दुनियाँ की बर्बादी में।

भारत आज गगन तक पहुँचा,
सूरज का उजियारा है।

आने वाला वक्त लिखेगा,
फिर से अब इतिहास नया।
सत्य उजागर हो जाएगा,
धूल उड़ाता वक्त गया।

मान रहा है आज जमाना,
पहले बहुत नकारा है।

भारत के हैं जो भी दुश्मन,
खोलो कान जरा सुनलो।
सबके सपने साथ हमारे,
जाल कोई चाहे बुन लो।

दानवता का जहर हमीं ने,
कितनी बार उतारा है।

हो अखंड विघटन अब छोड़ो,
जय हिंद हमारा नारा है।
सब मिल कर अंबर पर लिख दो,
भारत देश हमारा है।

तार बेतार

जब कोई तस्वीर बनाऊँ,
चेहरा एक उभर आता है।
झील सी आँखों में चाहत का,
छलका प्यार नजर आता है।

दूर भी रहकर पास हमारे,
नजर न आता मगर पुकारे।
मैं लहरों में बहता जाऊँ,
दिखते कितनी दूर किनारे।

बस पाई थी एक झलक ही,
लम्हा याद मगर आता है।

सच कहते हैं ये जग वाले,
हम आए हैं दूर गगन से।
है कितना विस्तार धरा का,
बंधन हैं अदृश्य लगन के।

अंजाने की आँखों में भी,
घर संसार नजर आता है।

दूर-दूर से उड़कर आते,
मील हजारों कितने पंछी।
इनकी चाहत में भी हमने,
देखी है तासीर लगन की।

हर मौसम का असर है अपना,
क्या आधार नजर आता है।

करता हूँ मैं रोज प्रतीक्षा,
मगर प्रतीक्षा एक उसी की।
हो चर्चा दुनियाँ का चाहे,
मगर समीक्षा एक उसी की।

होती है झंकार हृदय में,
स्वर बेतार नजर आता है।

आधी हक़ीक़त आधा फ़साना

समझ ली बात काफ़ी है,
ज़रूरत क्या बताने की।
सचाई है यहाँ कितनी,
फ़ितरत क्या ज़माने की।

कोशिश की नहीं हमने,
इनायत हो गई फिर भी।
घर वो चल के आए हैं,
थी चाहत पास जाने की।

कभी ख़ामोश रहकर भी,
दिलों की बात होती है।
खुशी में भी ज़रूरत है,
कभी आँसू बहाने की।

देता है दिखाई जो,
ज़रूरी क्या हक़ीक़त हो।
धधकते हैं कहीं शोले,
अदा है दिल मिलाने की।

जमाना है नया मान,
बदलता वक्त रहता है।
जमी पर रस्म है कब से,
ख़ाली हाथ जाने की।

अपना घर बनाया है,
मुसाफ़िर ने भला कैसा।
दिलों में है बड़ी दूरी,
थी हसरत पास लाने की।

सुनाऊँ मैं वही किस्से,
सफ़र में जो सुना देखा।
हक़ीक़त है फ़साना है,
हस्ती क्या दिवाने की।

एक कली मुस्काई

(एक बाल गीत बेटियों के लिए)

नन्ही कली आज खिली,
रंग गंध साथ मिली।
सारी रात गुलशन में,
फूलों की बात चली।

आगन में मेरे बहार छाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

हँस दे तो फूल झरे,
रोज़ नए रूप धरे।
आँखों से बोले,
नज़रों से तोले।

सर्दी में जैसे धूप छाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

बिल्ली जो देखे,
तो आँख मींचे।
उँगली को पकड़े,
मुट्ठी को भींचे।

सुन के कहानी नींद छाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

सोए पलंग पर,
मिलती है नीचे।
पापा बिछाते हैं,
नीचे गलीचे।

नख़रों से खाना आज खाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

पानी को पप्पा,
मम्मी को मामा।
चाचा को चाचू,
झट पट में हाँ हूँ।

मामा को मामू बोल पाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

पल पल में ना ना,
नानी को नी नी।
चिड़िया को चूं चूं,
कुत्ते को छू छू।

नख़रों की नानी गीत गाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

बूआ को जाने,
मौसी की माने।
दादा के संग-संग,
गाए वो गाने।

मईया ही नाजों को झेल पाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

दादी कहानी,
नानी सयानी।
दांतों के अंदर,
उँगली चबानी।

छम-छम छना छन नाच पाई है,
चाँदनी पर हो कर सवार आई है।

मंज़िल

मक्सद मंज़िल पाने का है,
यह दस्तूर जमाने का है।

सभी मुसाफ़िर हैं दुनियाँ में,
थोड़ा साथ निभाने का है।
ठहर गए हो ये गफ़लत है,
यह तो काम बहाने का है।

दिन भर साँसों से रिश्ता है,
जीवन चलते जाने का है।
कब तक गुम सुम आप रहोगे,
ग़म तो सिर्फ़ भुलाने का है।

करो हौसला रोना छोड़ो,
किस से हाथ छुड़ाने का है।
सुबह हो गई नींद से जागो,
बिगड़े काम बनाने का है।

चलो सफ़र पर साथ हमारे,
शाम को जश्न मनाने का है।
मक्सद मंज़िल पाने का है,
यह दस्तूर ज़माने का है।

कर्मफल

अर्ध चंद्रमा दिया दिखाई,
बाक़ी चाँद छुपा किस ओर।
देख रहा है उधर किसी को,
या है नज़र हमारी ओर।

सूरज देता यहाँ दिखाई,
उधर रात घिर आई है।
कहीं व्योम की देख लालिमा,
कली-कली मुस्काई है।

अगर उजालों की चाहत है,
दीपक बन जलना होगा।
कोई अटल नहीं है जग में,
उगना या ढलना होगा।

नेह पास में बंधे हुए ये,
सूरज चाँद सितारे हैं।
आते-जाते सुख-दुःख निर्भर,
कैसे काम हमारे हैं।

सूरज बन कर किया उजाला,
या विध्वंस किया केवल।
हमने किस को राह दिखाई,
या बस घात कहीं बस छल।

स्वेत-श्याम दो रंग धरा पर,
लगते बहुत प्रभावी हैं।
लेकिन नेकी के फल मीठे,
सदा अवश्यभावी हैं।

सूरज होना अगर असंभव,
दान दीप जैसा कर लूँ।
झुलस रही है धरा ताप से,
उस की पीड़ा कुछ हर लूँ।

हरे-भरे कुछ वृक्ष उगाऊँ,
जल को दूषित अब न करूँ।
करूँ राष्ट्र से प्रेम सदा मैं,
अंधकार से भी न डरूँ।

खंड-खंड होने से अच्छा,
अब अखंड होना होगा।
तभी विषैले सर्पों को भी,
अब प्रचंड रोना होगा।

तभी धरा पर रहे उजाला,
तभी धरा पर होगी भोर।
अर्ध चंद्रमा दिया दिखाई,
बाक़ी चाँद छुपा किस ओर।

सात फेरे

सनातन धर्म में शादी जीवन का एक पवित्र आयोजन है।
सात फेरों के साथ सात वचन जीवन भर साथ निभाने की प्रतिज्ञा है।

साथ-साथ जीने की क़समें,
उस पर वचनों का अनुबंध।
जीवन के बहते धारों पर,
है तटबंधों का अनुबंध।

जीवन है संपूर्ण तभी,
लेने होंगे फेरे सात।
यही व्यवस्था रही हमारी,
होंगे पति-पत्नी तब साथ।

यज्ञ में साथ रहेंगे दोनों,
हर दिन साथ रहें दोनों।
तीर्थाटन या पुण्य तभी हो,
पथ पर साथ चलें दोनों।

प्रियतम एक रहे जीवन में,
तन-मन दोनों के साथी।
दीप धरा पर रहे प्रकाशित,
साथ रहे दीपक बाती।

रिश्ते नातों में करना है,
दोनों रिश्तों का सम्मान।
वेद मंत्र के साथ बंधा है,
इस जीवन का पूर्ण विधान।

दुनियाँ का लेना-देना हो,
सहमति सम्मति साथ रहे।
सुख-दुःख दोनों आते-जाते,
पर हाथों में हाथ रहे।

प्राण बिना कोई देह नहीं है,
साथ कहाँ जब नेह नहीं।
प्रेम गंध है इस जीवन की,
नीर बिना कोई मेघ नहीं।

जीवन जैसे है एक रथ तो,
पति-पत्नी हैं दो पहिये।
पथ हो ऊँचा नीचा फिर भी,
साथ निभाते ही रहिए।

हर कोने में अनुशासन है,
वचनों के संग है अनुबंध।
फूल के बीच समाए बैठा,
जैसे फूलों का मकरंद।

सबकी जान बसी बुलबुल में,
जाती बुलबुल वर के साथ।
डाल दिए जब सातों फेरे,
लेलो तब हाथों में हाथ।

राजदुलारी उसके घर की,
अब पटरानी इस घर की।
घर के होते इस जीवन में,
खाए न ठोकर दर-दर की।

अपनी बेटी हुई पराई,
झर-झर आँसू बहते हैं।
है सच्चा पथ जीवन का ये,
जे.पी.रावत कहते हैं।

बोल

वाणी बोलो सोच के,
लघुता समया कूल।
अपने बल टिकती कहाँ,
सर पर छाई धूल।

शब्द-शब्द में मंत्र है,
बड़ा शब्द का भेद।
थाली में भी हो रहे,
छलनी जितने छेद।

विरह गीत

मौसम आया है यादों का,
ओ परदेशी लौट के आ।
दिल में है गहरी खामोशी,
तू भी अपना हाल बता।

माना वक़्त नहीं मिलता है,
पत्थर सख्त नहीं हिलता है।
उम्र गुजरती जाती है बस,
तन्हाई का रोग रहा डस।

उम्र रहेगी इतनी प्यासी,
फिर बरसेगी कौन घटा।

कौन ज़रूरी खुद ही जानो,
क्या मजबूरी खुद पहचानो।
साथ निभाने का था वादा,
कटता सफ़र अकेले जादा।

है सब याद हमें सच मानो,
अब तो अपनी बात निभा।

अगर कोई है और इरादा,
झूठ न कहना हम से ज्यादा।
सहना होगा दर्द हमें कुछ,
मैं न रहूँगी और यहाँ चुप।

है मजबूरी माना मैंने,
मुझ को अपने पास बुला।

उन सपनों का हल क्या होगा,
है विश्वास नहीं छल होगा।
जीवन कौन जीएगा ऐसे,
इतना जहर पीएगा कैसे।

दर्द न देना दिल को इतना,
हो न सके एक रोज दवा।
मौसम आया है यादों का,
ओ परदेशी लौट के आ।

श्री कृष्ण भावामृत

(ब्रज भासा)

श्री कृष्ण कौ प्यार पराग बन्यों,
जो गोपिन के मन आइ समायौ।
श्री राधा संग सुगंध सरोज,
ये है ब्रज धाम न देवहु पायौ।

धेनु धरा और संत समाज,
व्याकुल हो अति नीर बहायौ।
तब ब्रज नाथ कृपा करि के,
सब दुष्टन कौ मान घटायौ।

अतिशय भार धरा सहती और,
अर्थ अनर्थ भयो अधिकायौ।
जाकौ वेदहु नित्य बखान करें,
तेहि देवकी गर्भहि आइ समायौ।

मात यशोदा गोद लिए सब,
काज किए और झूल झुलायौ।
तीन पगे जो लघे तिहु लोकन,
ऊखल बंधन बाँधि दिखायौ।

दृश्य-अदृश्य वही जग में,
और देव दनुज जाकौ पार न पायौ।
यमुना के तट कुंज करीलन,
सखीयन के संग रास रचायौ।

राधा कृष्ण सदा मन बसिया,
गोपी ओ ग्वालन संग निभायौ।
जो वृषभान सुता ब्रजराज है,
कृष्ण वही वसुदेव कौ जायौ।

चाणूरादि बकासुर तारयो।
कालयवन संग भागि न पायौ।
माँ कौ मान पूतना पाई,
इंद्र कौ मान कहाँ रहि पायौ।

गोवर्धन की करि परिकम्मा,
सूरदास के मन अति भायौ।
मीरा हो गई प्रेम दिवानी और,
और द्रोपदि की लाज बचायौ।

गीता ज्ञान कौ ध्यान रखो जामें,
वेद पुराण कौ सार समायौ।
ये कलि काल प्रभाव अचूक है,
जे.पी.बात कहाँ कहि पायौ।

चिड़िया और किसान

(बाल गीत)

सुनो कहानी बिटिया रानी,
था जंगल में मोर।
मोर छुपा पीपल पर बैठा,
नीचे बैठे चोर।

वहीं पास एक नदिया बहती,
तट पर फैली रेत।
तभी एक नन्ही सी चिड़िया,
आई चुगने खेत।

खुसुर-फुसुर करते चोरों ने,
देखा चारों ओर।
माल दबा धरती के अंदर,
देख रहा था मोर।

चिड़िया चूं-चूं करती जाती,
गाती जाती गीत।
तभी खेत का मालिक आया,
चोर हुए भयभीत।

चिड़िया इधर-उधर उड़ जाती,
दौड़ा बहुत किसान।
हारा थका बैठ कर बोला,
चिड़िया रानी मान।

चिड़िया रानी पास आ गई,
बिछा हुआ था जाल।
फ़ँस गई चिड़िया पिंजरे में,
हाल हुआ बेहाल।

हाय-हाय चिड़िया चिल्लाई,
खाया एक न दाना।
मोल बता अपने दाने का,
और न चिल्लाना।

था लालच का चोर कहा,
था दाना सोने का।
उतना ही बस सोना देदे,
काम न रोने का।

मोर देखकर हाल यहाँ का,
हुआ बड़ा बेचैन।
किया इशारा तब चिड़िया को,
और चलाए नैन।

जाल उठा चल दूर उधर,
तू नहीं ठीक किसान।
चोर छुपा है तेरे अंदर,
हो गई अब पहचान।

पीपल के नीचे सोना है,
हटा उधर मिट्टी।
तभी मोर ने भी राजा को,
लिख डाली चिट्ठी।

रंगे हाथ जो पकड़ा जाए,
चोर वही होता।
अब रस्तों को बंद न करना,
बोल रहा तोता।

रस्तों पर नहीं जाल बिछाओ,
समझो नादानों।
हाल यही तुम सब का होगा,
बात सही मानो।

साँझ और सवेरा

अंधेरों में है रौशनी,
जगमगाती।
अंधेरों को ये बात,
पल भर न भाती।

कोई जुगनुओं की तरह,
जल रहा है।
है आग कैसी,
नज़र ही न आती।

है रौशनी आज,
दिल को लुभाती।
है कैसा अंधेरा,
दीपक न बाती

नहीं शाम ठहरी,
हँसती हँसाती,
कल रात बीती गई,
गीत गाती।

मेरी बात पर वो,
ज़रा मुस्कुराए।
उस अल्हड़ कली की,
बड़ी याद आती।

किसी की हँसी को हैं,
आँखें तरसती।
किसी की हँसी दिल को,
पल भर न भाती।

उन्हें देखकर है ये मौस,
सुहाना।
कभी याद उन की तड़प भी,
बढ़ाती।

अंधेरों में हैं,
रौशनी जगमगाती।
अंधेरों को ये बात,
पल भर न भाती।

संवाद

लहरों से करनी थी बात,
मिला समंदर का भी साथ।
इठलाकर कर लहरें बोलीं,
अपनी क़िस्मत अपने हाथ।

अगर किनारे रुक जाता,
ना लहरों से मिल पाता।
गहराई में ही संभव है,
थोड़े बहुत मोती पाना।

ठीक नहीं ख़ाली जज्बात,
अपनी क़स्मित अपने हाथ।

लंगर डाले थे जलपोत,
लेकिन नहीं गवाए होश।
इंसानों के हाथ कमान,
करते हैं हर काम तमाम।

जब घर छोड़ गुज़ारें रात,
अपनी क़स्मित अपने हाथ।

पाने की हो बात तभी,
करते हों कर्तव्य सभी।
मुफ़्त नहीं कोई अधिकार,
समझ न पाते कुछ बीमार।

करते रोज़ यहाँ पर घात,
अपनी क़िस्मत अपने हाथ।

देखी पीछे परछाई,
बात समझ में तब आई।
जहाँ धधकता लावा है,
मन का रोग छलावा है।

दोनों हाथों का हो साथ,
अपनी क़िस्मत अपने हाथ।

दिल की दुनियाँ बहुत बड़ी,
हों अंदर दो चार घड़ी।
हो चाहे लहरों से बात,
भवर छुपा ना करदे घात।

बोल उठा ये नील गगन,
आई बरसा खूब सघन।
ठंडी तेज हवा आई,
लगी कापने पछाई।

है कुदरत का कब से साथ,
अपनी क़िस्मत अपने हाथ।

ध्यान ज़रूरी है दिन रात,
अपनी क़िस्मत अपने हाथ।
सुबह समंदर भी था साथ,
लहरों से करनी थी बात।